ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 6 | FEBRUARY - 2018

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

आदिवासी लोक – साहित्य : स्वरूप और संभावनाएँ

प्रा.डॉ.सौ.सुरैय्या इसुफअल्ली शेख
असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक , अध्यक्षा–हिंदी विभाग,
मा.ह.महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,मोडनिंब. ता.माढा. जि.सोलापुर – (महा)

प्रस्तावना :

स्त्रीवादी साहित्य और दलित साहित्य के बाद अब आदिवासी चेतना से लैस साहित्य भी साहित्य और आलोचना की दुनियॉ में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चूका है। हांलाकि आदिवासी लोक में साहित्य सहित विविध कला माध्यमों का विकास तथाकाथित मुख्यधारा से पहले हो चुका था,लेकिन वहॉ साहित्य सृजन की परंपरा मूलतः मौलिक रही ।

आदिवासी लोक – साहित्य में आयी आदिवासियों की समस्याओं को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा जा सकता है । उपनिवेश कला में साम्राज्यवाद और सामंतवाद के गवजोड़ से पैदा हुई समस्या और दूसरे आजादी के बाद शासन की जनविरोधी नीतियॉ और उदारवाद के बाद की समस्या । आजादी के पहले आदिवासियों की समास्याएँ वनोपाज पर प्रतिबंध तरह तरह के लगान,महाजनी शोषण,पुलिस प्रशासन की जातियॉ आदि हैं । जबकि आजादी के बाद भारत सरकार व्दारा अपनाए गए विकास के मॉडल ने आदिवासियों से उनक जेल,जंगल और जमीन छीनकर उन्हें बेदखल कर दिया । इस प्रक्रिया में एक ओर उनकी सांस्कृतिक पहचान उनसे छूट जाती है । दूसरी ओर उनके अस्तित्व की रक्षा का प्रश्न खड़ा हो गया है । अगर वे पहचान बताते हैं तो अस्तित्व पर संकट खड़ा होता हैं ।

प्रकृति से सहचर्य स्थापित कर यह समुदाय जल,जंगल और जमीन के किसी कोने में दुबका रहा । विकास और संसाधन से वंचित रहा । परंतु दर – ब – दर विस्थापित होने के बावजूद इस समुदाय ने अपनी संस्कृति,सभ्यता,भाषा को भी त्यागा नहीं । लगातार शोषण और विस्थापन के शिकार रहने के कारण ही इस समुदाय में आक्रोश का भाव तीव्र होता राह जैसे . जैसे आदिवासी वर्ग शिक्षा और नागरी परिवेश से परिचित हुआ,उसे अपने मुख्य और वतूद का एहसास होता गया । आदिवासी समाज में शोषण का बोध जैसे – जैसे उसेन सभ्य जातियों के अत्याचार के विरूध्द बगावत का रास्ता अख्तियार किया,आदिवासी लोक – साहित्य में विद्यमान पीडा आक्रोश का भाव इसका प्रतीक है ।

आदिवासी विमर्श राजाराम भादू ने भी कहा है – ''आदिवासी साहित्य के उध्दभव और परिप्रेक्ष्य निर्माण में मराठी के दलित साहित्य के संबंध को जोडकर देखा गया है । जो सही भी है । लेकिन आदिवासी अस्मिता और उनकी संघर्ष धर्मी चेतना का विकास और प्रतिरोध संगठनों के निर्माण में नक्सलवादी आंदोलन के प्रेरणा प्रयासों को वहां लगभग अजरअंदाज कर दिया है । जबकि तेलंगना आंदोलन से ही आदिवासी स्त्री पुरूषों की गोत्रबंदी आरंभ हो गई थी । यह प्रक्रिया नक्सलवादी श्रीकाकुलम,दण्डकारण्य और भोजपुर में आगे परवान चढ़ी और भयंकर दमन और उत्पीड़न के बावजूद आज भी आदिवासी अंचलों में फैलती जा रही हैं ।''

आदिवासी अपने समाज संस्कृति तथा धर्म सामन्यता पर विश्वास करते है । इनका देवी . देवताओं की शक्तियों पर भरोसा होने के कारण रोग,कष्ट,बीमारी,परेशानियां तथा दुर्घटनाओं से मुक्ति पाने हेतू से लोग कालेश्वर आदि की पूजा पाठ करते हैं ।

आदिवासी समाज का विशिष्ट भूप्रदेश में रहना, समूह बनाना,अपनी बोली का ही प्रयोग करना,जाति पंचायत की रक्षा करना,वनों पर निर्भय रहना आदि उनकी विशेषताएं है महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश,झारखंड़,बिहार,जैसे अंचलों में नट,कानट,गौंड़,भील,उराव,कातकरी,कोल वारली,यंथाल,हो,बैननास,चेचु ,बंजारा मिझो,नागा गुर्जर,खासी कोली,धोबी जुआंग आदि अनेक आदिवासी जनजातियों की स्थिति एवं गति सुजलाग हो रही है ।

आदिवासी समाज के जीवन संघर्ष और परिवर्तन की चुनौतियों पर बात करते समय हमारे सपने पूरे विश्व में बिखरे पढ़े तमाम आदिवासी समुदाय हैं अपने आस्त्वि और आस्मिता के लिए संघर्षरत । तथाकथित मुख्यधारा की संस्कृति और सभ्यता ने उनके सामने दो ही रास्ते छोडें हैं कि या तो वे अपनी आस्मिता,अपना इतिहास अपनी परंपरा को मिटाकर 'मुख्यधारा' की वर्चस्ववादी संस्कृति को स्वीकार कर ले या फिर भौतिक रूप से पृथ्वी नामक इस गृह से अपना अस्तित्व मिट जाने के लिए अभिशप्त हो जाए ।

- **संदर्भ :**

1) आदिवासी साहित्य विमर्श – सं.अरूण ओझा ।
2) आदिवासी अस्मिता संकट – रमणिका गुप्ता ।
3) वर्ग,विचारधारा एवं समाज – एन्.के.महला ।